वेद मे– राजन्य
मनुस्मृति मे– बाहुज, क्षत्रिय, राजपुत्र
अन्य ग्रन्थों मे– क्षत्रिय, राजपुत्र, ठाकुर

अग्निवंशी क्षत्रिय

३६ शाखायें
१०२ उपशाखायें

संकलनकर्ता– पन्नालाल बिसेन
अधिवक्ता बालाघाट

शाखा	गोत्र	प्रमुख प्रशाखायें	कुलदेवी	कुलदेवता	वेद	प्रमुख निवासक्षेत्र
प्रमर :	वशिष्ठ	प्रमर, प्रमार, परमार, पँवार, पवार इनकी ३५ शाखायें– उज्जैनिया, भोजपुरिया नलहर, उम्मत, मेपाती, चन्देलिया, मोरी या मौर्यं, सोडा, सांकला, खैर, वेहिल, बुल्हर काबा रेंहवर, तुंडा, सोरटिया, हरेल, चोंदा खेजूर, सुगड़ा, बरकोटा, पूनी, सम्पल, भींवा कालपुसर, कलमोह, कोह्लिा, पूस्या, कहोरिया धुंदा, देवा, बरहर, जिप्रा, पोसरा, धुंता टिकुम्बा, टीका, भोयर, पावरा	दुर्गा या काली	शिव या महाकाल	सामवेद	आबू, मालवा, उज्जैन, धार, उत्तर-प्रदेश, बिहार, नेपाल, वैनगंगा, वर्धा बैतूल. खानदेश, गुजरात, राजस्थान पंजाब, छत्तिसगढ़, आन्ध्र, चन्द्रपुर मैसूर, बैसवाड़ा
चौहान	वत्स	२४ शाखायें। प्रमुख– हाडा, रवींदी, भदोरिया निमराणा, देवड़ा, दोगाई, वरगाया	आशापुरी	विष्णु	यजुर्वेद	बंगाल छोड़कर सारे भारत में
परिहार	कश्यप	१७ शाखायें। प्रमुख– चन्द्रावत, तूरावत केशावत, सुरराणा, पडिहाड़	चामुंडा	विष्णु	ऋग्वेद	उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार, गुजरात दक्षिण भारत
सोलंकी या चालुक्य	भारद्वाज	१६ शाखायें। प्रमुख– बघेल, सोसके सिखरिया, रालका	चामुंडा	विष्णु	अथर्ववेद	राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार गुजरात, मध्यप्रदेश